डी० बी० कॉलेज जयनगर,
एल० एन० एम० यु०, दरभंगा

नाम - मो० मुन्ना
सहायक आचार्य (अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग दिनांक - 28, 04, 2020
बीए० I st (प्रतिष्ठा) द्वितीय पत्र

प्रश्न :- पृथ्वीपुत्र उपन्यासक कथा वस्तु तर्कसंगत समीक्षा करु ?
अथवा "जिबइत रहब पहिने जरुरी छैक संसार मे तखन लोक-लाज नीक बेजाय" प्रस्तुत वाक्य खण्डक आलोक मे पृथ्वीपुत्र उपन्यासक तर्कसंगत समीक्षा करु ?

उत्तर :- पृथ्वीपुत्र उपन्यासक रचयिता छथि मैथिली साहित्यक मूर्धन्य कथाकार आ उपन्यासकार श्री ललित। ई एकटा आंचलिक आर सामाजिक उपन्यास थिक आ एहि मे वर्तमान फारबिसगंज जिलाक एकटा इलाका सम्पूर्ण ग्राम्य जीवन ओ ओकर घटनाक उल्लेख अछि। मुदा प्रधान रुप सँ एहिमे वर्णित अछि ओ घटना जे वर्तमान इतिहास आ युगधारक देन थिक। ओ घटना थिक सर्वे अथवा भूमि सुधारक नव प्रयास। एहि उपन्यासमे ललित सामान्य लोकजीवन आर समाजक अंतिम मनुष्यक आवश्यकता आकांक्षा आ प्रयासकेँ चित्रित कयने छथि। पृथ्वीपुत्रक कथावस्तु एकटा भूमिहीन आ निम्नवर्गीय ग्रामीण जीवनक परिवर्तन केँ चित्रित करैत अछि। ललित पहिल बेर एहि बात पर जोर देलनि जे जिबैत रहब पहिने आवश्यक भऽ जाइत अछि आ एहि तरहेँ नव जीवनक उद्घाटन भावुकताक संग कयने छथि। एहि नवीन संकल्पक दू पक्ष अछि-एक समाजिक आर्थिक आ दोसर मनोवैज्ञानिक। ललित जी प्रेम केँ जीवनक मूल आधारक रुपमे स्थापित करैत छथि। ई स्वाभाविक प्रेम नीक जकाँ उभरल अछि पिता-पुत्रीक संदर्भमे बिसेसरी बिजलीक रुपमे। प्रेमक स्वाभाविक चित्रण भेल अछि पिता-पुत्रक रुपमे जखन

बिसेसरी दुरयोधन सिंहक खूनक इल्जाम अपना ऊपर ल' लैत अछि। ई प्रेम सभ सँ नीक जकाँ बिजली कलटूक प्रेम मे उभरल जे समाज सँ बरेण्य होइतहुँ पवित्र, शुद्ध आ मानवीय अछि। बिजली कलटू मिसर सँ प्रेम करैत अछि आ ओकरा बिना नहि जी सकैतय। बिजली ओकरा लेल समाजिक रीति-रिवाज, लोक संस्कार सभक परित्याग क' दैत अछि।

मोनमे बसल रहय गोरका चनकावला कलटू। .... कहाँ देवदारु सन ओ आ कहाँ खयरक गाछ सन ई (पति हीरालाल) मनक मनोवैज्ञानिक अध्ययन कउ रचनाकार स्थापना कै दैत छथि –
"मगर जे पवित्र नै होइ छै तकर प्रेम आर कष्टदायी होइछ।"

बिजली - हमहूँ तोरे मोन पाड़िक' ओतुका दुख खेपि ली। तोँ जँ मनमे नै रहितह' ओतक दुख मे बेरा-बेरी चाहि खेपी मुइल रहितहुँ।"

समाजिक पक्ष :

पंचैतीमे अपन बेटाक लोक-लाजक चिंता होइत देखि कँ बिसेसरी सोच मे पड़ि गेलैक –
" आइ बिसेसरी लोक-लाज सँ डेरायल रहितै त' एहि पाँच प्राणीक परवरिश भेल रहितै ? कोशीक बाढ़ि सँ मारल बाँझ धरतीकँ चाँगक प्रयासमे कतियाने अन्न आ दवाइक बेत्रक मरि गेल रहितै ई सब। एहि उपन्यास मे दयनीय

आर्थिक स्थितिक चित्रण भेल अछि।

" दुसाध मुसहर लोकनि मालिकक जन बनिहार रहय। मालिक सबमे जखन आपसी बाँट होइक त' सम्पत्तिक संग जोड़लोक बाँट होइक। लोकक जीविकाक साधन रहैक मजूरी आ चोरी।"

Scanned with CamScanner

एहि उपन्यास मे परम्परा आ आधुनिकताक द्वंद्व दू पीढ़ीक टकराहटक माध्यमसँ बहरायल अछि।

बिसरवी चोरी कँ जीविकाक साधन मानैत अछि आ ओकर बेटा सरुपा ओकरा नीच कर्म। ओ मेहनत सँ अपन जमीन पर खेती कऽ अपन जीविकाक साधन जुटाबय चाहैत अछि। बेनी आ बिजली हमउम्र होइतहुँ दू पीढ़ीक प्रतिनिधित्व करैत अछि। बेनी सामाजिक आचार-विचार संस्कार के लक्ष्मण रेखा मानैत अछि तँ बिजली सामाजिकताक उपर वैचारिकता कँ महत्व दैत अछि। बिजली –

"मौजी हमरा कखनो क' होइत जे एको पल ले जँ तो बिजली भ' जेतौं आ तोरा मोनमे आगि लेसा जेतौक – तोहर समटा गप हम मानि लितिऔक।"

एहि उपन्यासमे बदलैत सामाजिक स्थितिक चित्रण अछि जाहिमे निम्नवर्गीय जीवनक परिवर्तित रुपक विश्लेषण भेल अछि। सामाजिक बन्धनक शिथिलता कँ चित्रित कऽ ललित एकटा नव अध्यायक श्री गणेश कयने छथि। ललित जी एहि उपन्यासमे मानव स्वभावक नैसर्गिक प्रवृति ओ भावना कँ प्रधानता देने छथि। 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यास मानव जातिक मूलभुत भावना ओ वासनाक चित्र उपस्थित करैत अछि।